चित्रकूट 11 अप्रेल 2019 । श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा संचालित गौ सेवा केन्द्र का 17वॉ वार्षिकोत्सव कार्यकम मनाया गया। कार्यकम के मुख्य अतिथि कथावाचक मानस मर्मज्ञ युवराज स्वामी श्री बद्रीप्रपन्नाचार्य जी महाराज थे। इस अवसर पर श्रीमती बिलोनी मफतलाल, ट्रस्ट के ट्रस्टी डा0 बी0 के0 जैन, एवं गोसेवा केन्द्र की संचालिका ऊषा जैन सहित देश के कई प्रान्तों से आये हुये प्रमोद भाई, रमाबेन, भारती बेन सहित सैकडों की संख्या में गुरु भाई एवं बहने एवं सदगुरु परिवार के सदस्य भी उपस्थित रहे। गौसेवा के केन्द्र की संचालिका श्रीमती उषा जैन ने पधारे हुये सभी अतिथियों का अभिनंदन करते हये बताया कि 17 वर्ष पहले सन् 2002 में 250 गायों के साथ गौसेवा केन्द्र की शुरुआत हुयी थी। गोसेवा केन्द्र की प्रेरणा पूज्य गुरुदेव रणछोडदास जी महाराज से मिली। हमने गावों में जाकर देखा कि गायों के लिये चारापानी की सुविधा किसानों के पास उपलब्ध नहीं हैं। तब गौमाता की सेवा के लिये संस्था ने गौसेवा केन्द्र की स्थापना की। आज गुरु भाई एवं बहनों के सहयोग से गौसेवा केन्द्र में लगभग 1200 से अधिक गायों की सेवा हो रही है जिनके भोजन, पानी, दाना एवं दवाओं की पूरी सुविधा उपलब्ध है। गायों की अनदेखी से हमारे जीवन के साथ प्रकृति का संतुलन भी बिगड रहा। आज से कुछ वर्षों पहले खेती में गायों का विशेष योगदान हुआ करता था गाय के बछडे बडे होकर खेतों की जुताई में सहायक थे आज वह प्रकिया बिलुप्त होती जा रही है। उनकी जगह ट्रेक्टर एवं अन्य मशीनों ने ले ली है जो प्रकृति के लिये हानिकारक है। पूज्य गुरुदेव की प्रिय शिष्या रमा बेन ने गौ सेवा लिये तन, मन, धन तीनों प्रकार से समर्पित होने का आग्रह करते हुये कहा कि संतो द्वारा गौसेवा के महत्व को बताया गया है स्वयं भगवान को भी गाय बहुत प्रिय थी। जो धर्मशील व्यक्ति गाय सेवा करते हैं उनके यहां सुख सम्पत्ति अपने आप चलकर आती है। मुख्य अतिथि श्री युवराज स्वामी महाराज ने कार्यकम को सम्बोधित करते हुये कहा कि हमारे जीवन के संस्कार में गौमाता की सेवा को बताया गया है। गौ सेवा के इस यज्ञ में आप सब जो पूर्णाहुति दे रहे है वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। धर्म के अनुसार गाय हम सब की माता है उसके दूध से हमारा पालन, पोषण होता है। गाय में मातृत्व का भाव देखने को मिलता है। गाय की पवित्रता का इससे बडा प्रमाण और क्या हो सकता है कि किसी स्थान को पवित्र करने के लिये उसके गोबर का लेप किया जाता है। सदगुरु सेवा संघ ट्रस्ट नेत्र चिकित्सा के साथ गौ सेवा केन्द्र के माध्यम से गायों की सेवा कर रही है ये अपने आप में बहुत बडी उपलब्धि है। उन्होने बताया कि वास्तुशास्त्र के अनुसार श्रष्टि का प्रारंभ गाय और ब्रम्हा से हुआ है। गायों की सेवा करने से जो संतुष्टि मिलती है। जिस रघुवंश में भगवान राम का जन्म हुआ उस रघुवंश का प्राकट्य भी गौसेवा का परिणाम है। इस धरती में गाय से बढकर प्रत्यक्ष देवता दूसरा कोई नहीं है हम सब को अपने सामर्थ अनुसार गौमाता की सवा करनी चाहिये। उन्हाने सबसे आग्रह किया कि हम सबको सम्मान पूर्वक एक गाय का पालन अवश्य करना चाहिये। कार्यकम में मुख्य अतिथि सहित सभी अतियिों ने गौमाता की पूजा कर गुड और अन्न खिलाकर अपने को धन्य किया।